संवाद

आदमी से उम्मीद कैसी -अंजू

जी.बी. रोड राजधानी दिल्ली का रेड-लाइट एरिया है। यहां पर रहने वाली यौनकर्मी महिला अंजू से बातचीत के कुछ अंश, उनके अपने शब्दों में ही हम आपके साथ बांट रहे हैं। इस काम में मजबूरीवश आने वाली अंजू एक ऐसी सशक्त औरत का प्रतीक है जिसने कठिन परिस्थितियों के बावजूद एक सुनहरे कल के सपने देखने की हिम्मत की है।

अमृताः तुम्हारा नाम क्या है? कहां रहती हो?

अंजूः मेरा नाम अंजू है। मैं जी.बी. रोड पर रहती हूं।

अमृताः अंजू तुम यहां कैसे आई। क्या तुम्हारी शादी हुई है?

अंजूः मेरी शादी हो गई थी। पति ने छोड़ दिया। वह अच्छा आदमी नहीं था। मारता-पीटता था। फिर मैं किसी के चक्कर में आ गई और उसने यहां लाकर छोड़ दिया।

अमृताः उस समय तुम्हारी उम्र क्या थी?

अंजूः मुझे यहां आए पंद्रह साल हो गए हैं।

अमृताः जब यहां आईं तो कितने साल की थीं?

अंजूः करीब बीस साल की।

अमृताः तुम्हारे माता-पिता कहां हैं?

अंजूः जब मैं यहां आई थी तो मां-बाप से बीस सालों तक नहीं मिली थी। फिर मेरे पास आने वाले एक आदमी को मैंने अपनी कहानी बताई। उसने घर ढूंढ कर मुझे माता-पिता से मिलवाया। मिलकर वे बहुत खुश हुये। तभी से आना जाना हो गया है। सब लोग ठीक हैं घर में।

अमृताः जब इतने साल मां-बाप से नहीं मिलीं तो कैसे रहती थीं?

अंजूः मैं बहुत दुखी रहती थी। मैं अपने मां-बाप को बहुत प्यार करती हूं। जब उनसे नहीं मिली थी तो बहुत रोती थी। किसी से भी नहीं बोल पाती थी। अब मेरे मां-बाप मिल गये तो बहुत खुश हूं।

अमृताः जब यहां आई तो तुम बहुत छोटी थीं, दिल्ली में किसी को जानती भी नहीं थीं। जी.बी. रोड पर अनुभव कैसा रहा?

अंजूः मुझे मालूम नहीं था कि यह जी.बी. रोड है। हम यूपी से आये थे। जब सुना कि यहां रण्डी रहती हैं तब समझ में आया। फिर भी मैंने सोचा कि मैं झाड़ू-बर्तन मांज कर गुज़ारा कर लूंगी। कुछ लोगों ने कहा कि रण्डी बस शादी-ब्याह में डांस करती हैं। मैंने सोचा मैं भी कर लूंगी। इन लागों के साथ डांस करने जाऊंगी तो वही से घर चली जाऊंगी। पर बाद में पता चला कि जो धन्धा करती हैं वो ही यहां रहती हैं। मैं भी यही करने लगी। मजबूरी इतनी थी कि यहीं की होकर रह गई।

अमृताः मां-बाप से इतने सालों बाद मिलीं तो क्या बताया उन्हें कि कहां थीं और क्या काम करती थीं?

अंजूः मां-बाप को बताया कि हास्पिटल में काम करती हूं। कहा एक आदमी मिल गया था जो टूरिस्ट गाइड का काम करता था उसी से मैंने शादी कर ली थी। उसी आदमी से मां-बाप को मिलवाया था।

अमृताः आप हिन्दू हैं कि मुसलमान?

अंजूः मैं मुसलमान हूं।

अमृताः पर आपने नाम हिन्दू ले रखा है?

अंजूः यहां नाम बदल के रहती हूं।

अमृताः यहां पर जीने में क्या परेशानी आती है?

अंजूः यहां परेशानी तो बहुत हैं। यह कोई अच्छी जगह तो है नहीं। मजबूरी में इन्सान को यही काम करना पड़ता है। यहां से बाहर निकलकर कहीं जा नहीं सकते।

अमृताः और क्या तकलीफ़ है?

अंजूः जब इन्सान की ज़्यादा उमर हो जाती है तो ग्राहक भी कम हो जाते हैं। जब यहां नया-नया आता है तो इन्सान अच्छा पैसा कमाता है। जब उमर ढल जाती है तो कुछ नहीं कमा पाता है। इसलिए पहनने-ओढ़ने में, खाने-पीने में, रहने में परेशानी हो जाती है।

अमृताः उम्र बढ़ने पर यहां रहने में कैसे परेशानी हो जाती है?

अंजूः उम्र बढ़ने के बाद मकान मालिक इतनी पूछ थोड़ी करती है। जो अच्छी-अच्छी जवान लड़कियां होती हैं, जो अच्छा पैसा कमाती हैं उन्हीं की पूछ करती हैं।

अमृताः अब तो आप सीनियर हो?

अंजूः वो तो है पर अगर कमरा बिक जाये तो हम यहां थोड़ी रह सकते हैं। मकान मालिक अभी बेचने की बात कर रहे हैं। मालिक लोग यहां से दूर रहते हैं अगर वो बेच देगें तो हमें जाना ही पड़ेगा।

अमृताः अंजू, आपकी ज़िन्दगी इतनी कठिन, इतनी मुश्किल रही है पर आप इन कठिनाइयों को झेलकर भी अपनी बिटिया को पढ़ा लिखा रही हो।

अंजूः जब मेरे बच्चे नहीं हुये थे तब मैंने ऊपर वाले से दुआ की थी कि मुझे लड़की पैदा न हो। पर ऊपर वाले ने मुझे लड़की दे दी। मैंने सोचा था लड़का होगा तो कहीं भी जाकर रह लेगा। अपना कुछ भी कर लेगा। लड़की हो गयी तो मेरी ज़िन्दगी खराब हो जायेगी। अगर मैं मर गयी तो क्या पता लोग उसे यहां ले आएं या वह अपनी मर्ज़ी से यहां आ सकती है। तब क्या होगा। कुछ नहीं होगा तो परेशानी की वजह से भी वह यहां आ सकती है। फिर मैंने सोचा था कि मैं यहां से काम छोड़ दूंगी पर ऐसा नहीं हो पाया। इसलिए मैंने लड़की को छोटेपन से ही यहां से हटा दिया था। खर्चा पानी देती रहती हूं उन लोगों को जो उसकी देखभाल करते हैं। बाहर ही पढ़ाया-लिखाया। वह बाहर ही रहती है। यहां पर कभी नहीं लाती हूं उसे।

अमृताः कितनी बड़ी है आपकी लड़की? स्कूल में पढ़ती है? उससे कैसे मिलती हो?

अंजूः दस साल की है मेरी लड़की। वह अलग रहती है यहां से दूर। मिलना होता है तो मैं वहीं पर चली जाती हूं। मेरी लड़की को कुछ नहीं पता है यहां का।

अमृताः बिटिया को लेकर आपके क्या सपने हैं?

अंजूः मैं उसकी शादी करना चाहती हूं। जिनके पास रहती है उनसे भी कहती हूं कि अगर मैं मर गयी तो उसकी शादी कर देना। अगर मैं ज़िन्दा रही तो खुद उसकी शादी करूंगी।

अमृताः उसे कितना पढ़ाओगी?

अंजूः जब तक वह पढ़ेगी उसे पढ़ाऊंगी। उसे छोटे से पढ़ने में लगाया है। ट्यूशन में भी पढ़ाया है। मुझे कुछ नहीं आता था, उसके साथ-साथ मुझे भी पढ़ना आ गया।

अमृताः क्या आप कभी स्कूल गयी थीं?

अंजूः नहीं, मैं स्कूल कभी नहीं गई।

अमृताः तुमने यहां पर पढ़ना सीखा है?

अंजूः हां, मैंने यहां पर पढ़ना सीखा। मैंने यहां पर अपनी लड़की के लिए मास्टरजी लगवाये थे तो उन्हीं मास्टरजी ने थोड़ी बहुत हिन्दी सिखायी। नाम लिखना आ गया है। पढ़ भी लेती हूं। लिख भी लेती हूं थोड़ा बहुत।

अमृताः जिस संस्था के साथ आप जुड़ी हैं उसके बारे में कुछ बतायें।

अंजूः मेरी संस्था यहां सेक्स वर्कर्स की मदद करती है। हम एड्स पर काम करते हैं। बीमारी के बारे में बताते हैं।

बीमारी होती है तो अस्पताल ले जाते हैं। उनको बताते हैं कि बीमारी कैसे-कैसे फैलती है। कंडोम के बारे में भी बताते हैं। लड़कियों को कंडोम लाकर देते हैं।

अमृताः तो आप एडयूकेटर हैं इस संस्था के साथ जी.बी. रोड पर?

अंजूः हां जी।

अमृताः और कुछ बताना चाहती हैं आप? पैसे वगैरह जमा कर पाई हैं आप अपनी बिटिया के लिए? उसकी पढ़ाई के लिये।

अंजूः हां, उसको पढ़ाने-लिखाने के लिये पैसे जोड़ती हूं। उसके लिये घर भी बनाया है, अलग से रहने के लिये। उसके लिये पैसे भी जोड़े हैं अलग से कि अगर मैं मर गई तो जिनके पास वह रहती है वे उसकी शादी करा सकें।

अमृताः अंजू आपने बहुत हिम्मत से काम लिया है। आपने मुझे यह भी बताया कि यहां पर कई बार किसी बच्ची को कोई ज़बरदस्ती बेचने आ जाता है तो आप ऐसी बच्चियों को नहीं खरीदती। क्यों?

अंजूः हां, मैंने ऐसा किया है। कुछ लड़कियों को समझाया है कि जो आदमी बहला-फुसलाकर यहां ले आते हैं वे उनके साथ न रहें। बताया कि उन्हें फंसाकर यहां लाया गया है। यहां पर काम करने से अच्छा है वापस घर चली जाओ। गांव से लड़कियां आदमियों के साथ आ जाती हैं। उन्हें नहीं पता होता कि यहां क्या काम होता है।

अमृताः क्या कुछ और कहना चाहती हो?

अंजूः अच्छे आदमी नहीं मिलते हैं। प्यार-मोहब्बत में फंसा लेते हैं लड़कियों को। फिर उनकी कमाई खाने लग जाते हैं। जब उमर ढल जाती है तो उसे छोड़कर चले जाते हैं। आदमी भी धोखा दे जाता है। पैसे भी इन्सान यहां जोड़ नहीं पाता है। यहां पर रहना मुश्किल हो जाता है।

अमृताः पर तुम तो अच्छी तरह से रह पाई हो। तुमने अभी तक अच्छी ज़िन्दगी बिताई है।

अंजूः हां, रह पाई। मगर कोई-कोई ही तो रह पाता है न। सब इन्सान नहीं रह पाते। अब देखो रत्ना कितनी परेशान है। बेचारी बूढ़ी है, उसको कोई नहीं पूछता। कोई दस-पांच रुपये देता है तो अपना गुज़ारा करती है। उसका लड़का यहीं कोठे पर रहता है पर कुछ नहीं कर पाता।

अमृताः रत्ना यहीं तुम्हारे कोठे पर रहती है?

अंजूः हां, वह बूढ़ी औरत है। यहीं हमारे कमरे पर रहती है। उसकी लड़की बाहर पढ़ती है। रत्ना के पास इतना भी नहीं है कि अगर कोई बीमारी हो जाये तो अपना इलाज करा ले। जब जवानी थी तो बहुत सारे आदमी थे। पर आज उसको कोई नहीं पूछता। मुश्किल से अपना पेट भरती है। इसलिये यह जगह बुरी है। जवानी तो यहां बहुत अच्छी कट जाती है पर बुढ़ापा नहीं कटता।

अमृताः यहां रह कर तुमने अपनी बेटी को अलग रखा। उसे पढ़ा लिखा रही हो, इस माहौल से दूर। अपने मां-बाप से जब तुम मिली तो क्या तुमने रुपये पैसे से उनकी कुछ मदद की?

अंजूः नहीं, मां-बाप इतने गरीब नहीं थे। अच्छा कमाते खाते थे। मां-बाप को मेरे पैसे की ऐसी कोई ज़रूरत नहीं थी। मैं तो मजबूरी में ऐसी जगह आ गई थी। गरीबी की वजह से नहीं आई थी। मुझे खाने या पहनने को कम नहीं था। यह था कि गांव की रहने वाली थी। पढ़ी लिखी नहीं थी। जैसा कोई कहता था वैसे सुनती थी। इतना मालूम भी नहीं था। किसी के चक्कर में यहां आकर फंस गई।

अमृताः इस घर में कैसे आई थीं।

अंजूः दो तीन दिन उस आदमी ने मुझे इधर-उधर रखा था मुझे बेचा नहीं था, ऐसे ही यहां लाकर छोड़ दिया था रोड पर। मैं जिस के पास रही वो अच्छी औरत थी। फिर बस उन्हीं के पास रहने लगी।

अमृताः तो जो यहां मालकिन थी वो अच्छी थी।

अंजूः बहुत ठीक थीं। उन्हीं की जगह पर मैं रहने लगी। उनसे मुझे कोई परेशानी नहीं थी। मैं बीस साल की उमर से काम कर रही हूं अब पंद्रह साल हो गये काम करते-करते। जब उमर ढल जाती है तो कुछ भी नहीं होता। इसलिये यह जगह ठीक नहीं है हमारे लिये। जवानी में तो सब कुछ ठीक है। जो जवानी में इस जगह से निकल जाता है उसकी ज़िन्दगी अच्छी कट जाती है।

अमृताः अंजू अभी आप कह रही थीं कि औरत को किसी पर भरोसा नहीं करना चाहिये।

अंजूः किसी आदमी पर भरोसा नहीं करना चाहिये। अपने लिये अपनी मेहनत से सब कुछ करना चाहिये। आदमी के पास कितना भी हो, चाहे कितना भी वह कहे पर तुम्हें आदमी पर भरोसा नहीं करना चाहिये। आदमी सब ऐसे ही पागल बना देते हैं। कोई सच्चे नहीं होते। औरत को अपनी मेहनत से ही अपने लिये जोड़ लेना चाहिए।

अमृताः और प्यार...?

अंजूः प्यार-व्यार क्या है? सब ऐसे ही बेवकूफ बनाते हैं। आजकल तो सभी कहते है कि हम तुमसे प्यार करते हैं। यहां आते हैं अपने शौक के लिये। क्या वे प्यार करेंगे सब से? कुछ प्यार-व्यार नहीं करते।

अमृताः तो औरत को अपनी मेहनत कर के पैसे जोड़ने चाहिये?

अंजूः हां, अपनी मेहनत कर के दो पैसे जोड़ने चाहिये। अपना बुढ़ापा भी है उसके लिये देखना चाहिये। हारी-बीमारी के लिये भी जोड़ के रखना चाहिये। पैसा है अपने पास तो सब कुछ है वरना कुछ नहीं है। आदमी चाहे कितना भी चाहने वाला हो। उसके पास कितना भी हो वह सिर्फ़ अपने लिये सोचता है। अपने घर के बारे में सोचेगा हमारे लिये कुछ नहीं सोचेगा। वह अपना उल्लू सीधा करता है हमारे पास आ कर। आता है हमारे संग सोने के लिये। पैसा देकर मतलब निकालता है। उससे उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

*इस साक्षात्कार के लिए हम **अंजू** व **अमृता** का शुक्रिया अदा करते हैं।*
अंजू के साक्षात्कार को कलमबद्ध करने के लिए हम दीप्ति श्रीवास्तव के आभारी हैं।